VRI Series No. 102

संप्रदाय ना धर्म है

सत्यनारायण गोयन्का

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी- ४२२४०३
महाराष्ट्र, भारत

विपश्यनाः एक परिचय

श्री गोयन्काजी ने म्यंमा के महान विपश्यना आचार्य सयाजी ऊ बा खिन से सर्वप्रथम सन १९५५ में 'विपश्यना' की साधना सीखी। तब से अभ्यास का क्रम जारी रहा। सन १९६९ में भारत आये। व्यापार-धंधे से सर्वथा अवकाश ग्रहण कर भारत के विभिन्न स्थानों पर **विपश्यना** साधना-विधि के दस दिवसीय शिविर लगाते रहे। सन १९७६ में प्रमुख विपश्यना केंद्र 'धम्मगिरि' की स्थापना के पश्चात अब तक पूरे विश्व में लगभग ५० विपश्यना केंद्र स्थापित हो चुके हैं तथा अन्य नए-नए केंद्र खुलते चले जा रहे हैं, जहां साधकों के लिए निःशुल्क निवास तथा भोजनादि की स्थाई व्यवस्था रहती है। विपश्यना सिखाने का सारा खर्च कृतज्ञ साधकों के दान पर निर्भर होता है। शिविरों का संचालन पूज्य गोयन्काजी तथा उनके द्वारा नियुक्त विश्व भर के लगभग ४०० से अधिक सहायक आचार्यों द्वारा किया जाता है। शिविर-काल के दौरान साधकों को बाहरी संपर्क से दूर, केंद्रों पर ही रहना अनिवार्य होता है।

भगवान गौतम बुद्ध द्वारा गवेषित 'विपश्यना' विद्या सर्वथा संप्रदायहीन एक प्रयोग प्रधान विधा है जिसमें अपने भीतर की सच्चाई का दर्शन करते हुए अपने मन को निर्मल बनाना तथा ऋत यानी प्रकृति के नियम के अनुसार आचरण करने का अभ्यास किया जाता है। इसी को धर्म कहते हैं। कालांतर में हम **धर्म** शब्द का सही अर्थ भूल गये और संप्रदाय को ही धर्म मानने लगे। आज जबकि धर्म के नाम पर चारों ओर इतनी अराजकता फैली हुई है, यह सांप्रदायिकता-विहीन विद्या घोर अंधकार में प्रकाश-स्तंभ सदृश है।

ध्यान की यह विद्या सीखने के लिए हर संप्रदाय के लोग – चाहे वे हिंदू हों या मुस्लिम; जैन, ईसाई, बौद्ध हों या सिक्ख – सभी आते हैं। बच्चों से लेकर वृद्ध बुजुर्गों तक सब उम्र के लोग आते हैं। बहुत ऊंची शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी आते हैं तो दूसरी ओर बिल्कुल निरक्षर अनपढ़ लोग भी आते हैं। अत्यंत धन-संपन्न भी आते हैं और बिल्कुल धनहीन भी। पुरुष-नारी तथा डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, व्यापार-उद्योगों के संचालक सभी आते हैं। किसी भी विपश्यना शिविर में समाज के हर वर्ग का यह अनूठा संगम आसानी से देखा जा सकता है। इतनी विविधताओं के होते हुए भी सभी लोग लाभान्वित होते हैं।

पूज्य श्री गोयन्काजी द्वारा रचित दोहों का यह लघु संकलन अधिक से अधिक लोगों को धर्म-मार्ग पर चल सकने के लिए प्रेरणा प्रदायक सिद्ध हो, यही मंगल भावना है।

विपश्यना विशोधन विन्यास.

मूल्यः रु. १/-

प्रकाशक :

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी- ४२२४०३, जिला- नाशिक, महाराष्ट्र, भारत

फोनः ०२५५३- २४४०७६, २४४०८६, २४४३०२ फैक्सः ०२५५३- २४४१७६.

संप्रदाय ना धर्म है

आओ मानव मानवी, चलें धरम की राह।
कितने दिन भटकत फिरे, कितने दिन गुमराह॥

धर्म न हिंदू बौद्ध है, सिक्ख न मुस्लिम जैन।
धर्म चित्त की शुद्धता, धर्म शांति सुख चैन॥

तीरथ तीरथ भटकते, हुआ न चित्त विशुद्ध।
दंभ चढ़ाया शीश पर, हुई मुक्ति अवरुद्ध॥

कर्मकांड को धर्म जो, समझ रहा नादान।
मिले कहां से धरमफल, धरम हुआ निष्प्राण॥

कर्मकांड ना धर्म है, धर्म न बाह्याचार।
धर्म चित्त की शुद्धता, करुणा सेवा प्यार॥

जाति वर्ण का, गोत्र का, चढ़ा शीश अभिमान।
शुद्ध धरम को छोड़ कर, भटक गया नादान॥

जिसके सिर पर चढ़ गया, संप्रदाय का भूत।
करे धर्म के नाम पर, काली ही करतूत॥

धर्म सार पाया नहीं, छिलके पकड़े रूढ़।
संप्रदाय को धर्म जो, समझ रहा वह मूढ़॥

संप्रदाय ना धर्म है, धर्म न बने दीवार।
धर्म सिखाए एकता, धर्म सिखाए प्यार॥

संप्रदाय या जाति का, जहां भेद ना होय।
शुद्ध सनातन धर्म है, वंदनीय है सोय॥

गुण तो धारण ना किया, रहे नवाते माथ।
बहा धर्म रस, रह गया, फूटा बरतन हाथ॥

भाई भाई में चले, घात और प्रतिघात।
कहां राम आदर्श है? कोरी मिथ्या बात॥

करे बुद्ध की वंदना, धारण करे न धर्म।
बिना धर्म धारण किए, कटें नहीं दुष्कर्म॥

शुद्ध धर्म जग में जगे, तो हों सब खुशहाल।
संप्रदाय जब प्रमुख हो, तो हों सब बदहाल॥

देख बिचारे धर्म की, कैसी दुर्गति होय।
लड़ें धर्म के नाम पर, पाप प्रफुल्लित होय॥

जटा-जूट माला तिलक, हुए शीश के भार।
भेष बदल कर क्या मिला, मन के मैल उतार॥

हुआ धरम के नाम पर, कैसा नर संहार।
धिक धिक ऐसे धरम को, लाख बार धिक्कार॥

हिंदू मुस्लिम बौद्ध सिक्ख, कहां हुए गुमराह।
कतल करें निर्दोष का, यह तो मजहब नांहि॥

वह ना सच्चा धरम है, ना सच्चा ईमान।
जिससे करुणा प्यार को, खो बैठे इंसान॥

शुद्ध धर्म से टूटती, संप्रदाय दीवार।
जो धारे उसके लिए, खुले मुक्ति के द्वार॥

संप्रदाय अनहित करे, धर्म करे कल्याण।
धर्म धार मंगल सधे, तन मन पुलकित प्राण॥

सबके मन जागे धरम, संप्रदाय से दूर।
बैर भाव सबके मिटें, भरे प्यार भरपूर॥

जन जन के मन प्यार की, गंगा बहे पुनीत।
यह मजहब की सीख है, यही धरम की रीत॥

कुदरत का कानून है, सब पर लागू होय।
जाति गोत्र का, वर्ण का, पक्षपात ना होय॥

हिंदू मुस्लिम पारसी, बौद्ध ईसाई जैन।
मैले मन दुखिया रहे, कहां नाम में चैन॥

दुर्मन मन दुखिया रहे, किसी जाति का होय।
सुमन सदा सुखिया रहे, किसी वर्ण का होय॥

संप्रदाय से संत की, होवे ना पहचान।
जिसके मन मैत्री जगे, संत उसी को जान॥

शुद्ध धरम का शांति पथ, संप्रदाय से दूर।
शुद्ध धरम की साधना, मंगल से भरपूर॥

हिंदू हो या बौद्ध हो, मुस्लिम हो या जैन।
शुद्ध धरम का जो पथिक, वही सुखी दिन रैन॥

मन के मैल उतार ले, जो चाहे सुख चैन।
मैले मन दुखिया रहे, बौद्ध होय या जैन॥

जाति वर्ण का, वर्ग का, जहां भेद ना होय।
जो सबका, सबके लिए, शुद्ध धरम है सोय॥

धर्म न मंदिर में मिले, धर्म न हाट बिकाय।
धर्म न ग्रंथों में मिले, जो धारे सो पाय॥

मंदिर मस्जिद भटकते, किसे मिला भगवान?
सेवा करुणा प्यार से, मनुज बने भगवान॥

सत्य धर्म तो एक है, फिरके हुए अनेक।
फिरकों के आवेश में, छूटा धर्म विवेक॥

पुस्तक पढ़ पंडित हुआ, कैसा चढ़ा गुमान।
खुले न अंतर के नयन, मिला न सच्चा ज्ञान॥

मत कर, मत कर बावले! मत कर वाद-विवाद।
खाल बाल की खींच मत, चाख धर्म का स्वाद॥

संप्रदाय ही प्रमुख है, धर्म हो गया गौण।
सरल सत्य व्यवहार को, यहां पूछता कौन?

संप्रदाय ना धर्म है, धर्म न बने दिवार।
धर्म सिखाए एकता, धर्म सिखाए प्यार॥

बढ़ा धर्म के नाम पर, संप्रदाय पुरजोर।
जन जन मन व्याकुल हुआ, दुख छाया सब ओर॥

संप्रदाय का मद बढ़े, धर्म तिरोहित होय।
अपना भी अनहित करे, जन जन अनहित होय॥

संप्रदाय होवे प्रमुख, धर्म गौण जब होय।
तभी धर्म के नाम पर, खून-खराबा होय॥

यह कैसा मजहब अरे, कैसा धरम इमान!
कतल किये जिसके लिए बेकसूर इंसान॥

तेरे दीन ईमान का, क्या यह है मजमून।
देख बहाया भूमि पर, बेकसूर का खून॥

अरे धरम के नाम पर, लोग बहायें खून।
समझ न पाये, धरम तो कुदरत का कानून॥

कैसा तेरा ईश्वर, कैसा रब्ब खुदाय?
तू जिसके ही नाम पर, खून बहाता जाय॥

क्या यह तेरा धर्म है, क्या ऋषियों की रीत?
जला दिये जीवित जहां, निरपराध भयभीत॥

भूला सच्चे धरम को, भूल गया ईमान।
भूल गया इंसान हूं, बन बैठा हैवान॥

वह ना सच्चा धरम है, ना सच्चा ईमान।
जिससे मन के प्यार को, खो बैठे इंसान॥

जहां जाति का, वर्ण का, जहां गोत्र का नाज़।
धरम न टिक पाए वहां, अहंकार का राज॥

संप्रदाय का धर्म से, तालमेल ना खाय।
एक सदा उलझावता, एक सदा सुलझाय॥

जब जब मनुज समाज में, जातिवाद बढ़ जाय।
तब तब मंगल धरम के, फूल सभी कुम्हलाय॥

बँधे जाति से, वर्ण से, तो हो धर्म मलीन।
संप्रदाय से जब बँधे, होय धर्मबल क्षीण॥

जात-पांत के फेर में, छुटा धरम का सार।
सार छुटा, निस्सार ही, बना शीश का भार॥

संप्रदाय की बेड़ियां, जात-पांत जंजीर।
धर्मचक्र से कट गयी, दूर हुई भव पीर॥

जात-पांत, कुल-गोत्र या, वर्ण-भेद ना होय।
जो जो चाखे धरम रस, सो सो सुखिया होय॥

धर्मगंग से ही धुलें, संप्रदाय के लेप।
उखड़े कल्पित मान्यता, चित्त होय निर्लेप॥

धरम जगे फिर मनुज में, बने मनुज भगवान।
सेवा करुणा प्यार से, धन्य होय इंसान॥

निर्भयता, निर्वैरता, सच्चा धर्म अकाल।
जागो सच्चे धर्म में, जागे सोहि निहाल॥

गुरुवाणी अनमोल है, अमृत भरा अपार।
धोवे मन के मैल को, जगे परस्पर प्यार॥

घर घर में सबके जगे, सत्य धर्म की लोय।
चित्त निखालिस शुद्ध हो, तभी खालसा होय॥

भूलें बीती बात सब, सुधरें सब व्यवहार।
बैर-भाव सारा मिटे, जन मन जागे प्यार॥

सब बंदों से प्यार कर, मजहब का फरमान।
बेकसूर को मार मत, बन सच्चा इंसान॥

हिंदू मुस्लिम बौद्ध सिक्ख, छूटे नहीं ईमान।
प्यार हमारा धर्म है, हम सच्चे इंसान॥

जन जन के मन प्यार की, गंगा बहे पुनीत।
यह मजहब की सीख है, यही धर्म की रीत॥

द्वेष अग्नि पर प्यार की, अमृत वर्षा होय।
सबका मन शीतल करे, सबका मंगल होय॥

नमन करूं मैं धर्म को, संप्रदाय से दूर।
जो धारे हित सुख सधे, मंगल से भरपूर॥